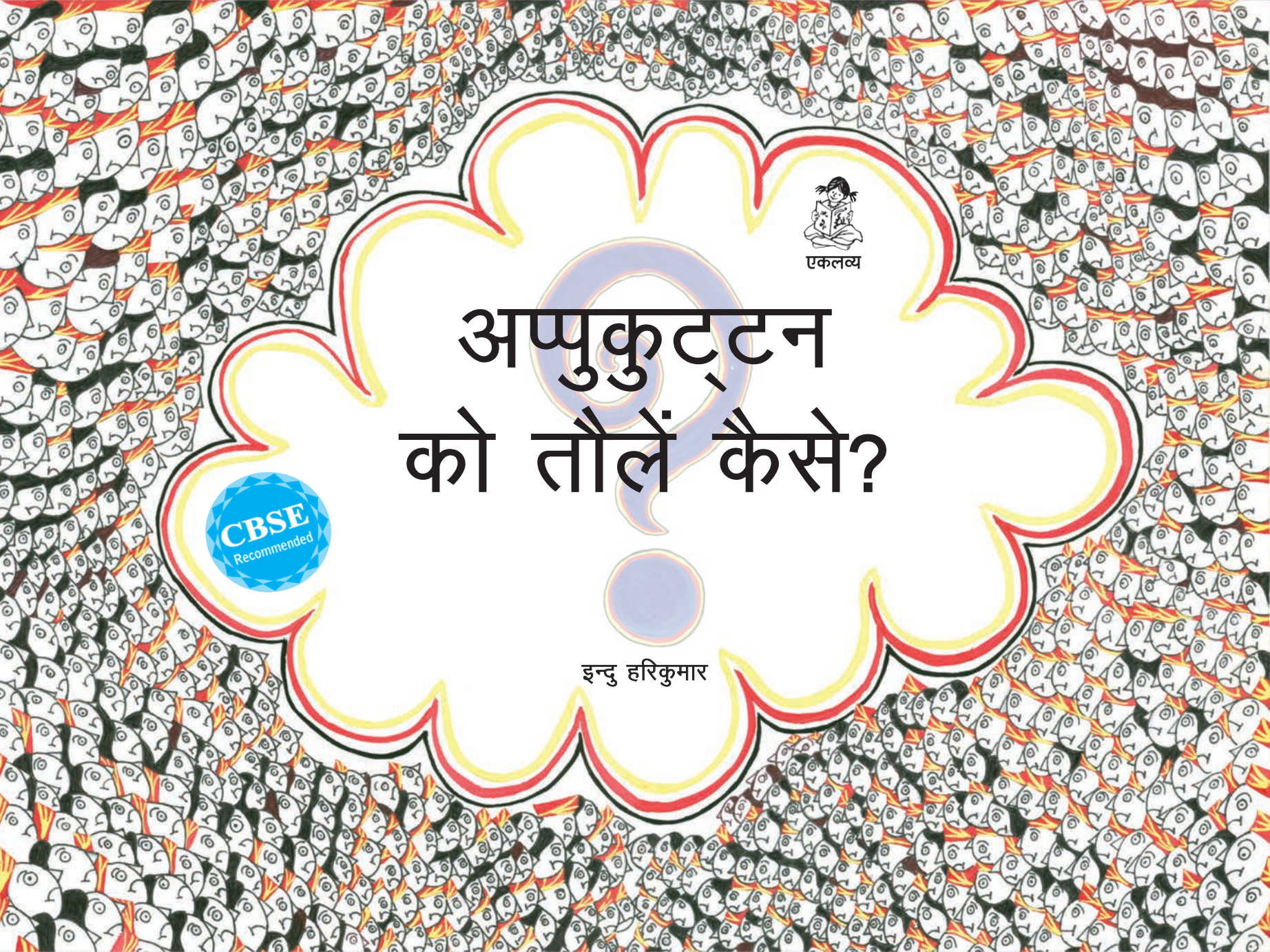

एकलव्य

अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे?

CBSE Recommended

इन्दु हरिकुमार

अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे?

कहानी व चित्र: इन्दु हरिकुमार
अँग्रेज़ी से अनुवाद: शशि सबलोक

एकलव्य

अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे?

APPUKUTTAN KO TOLEIN KAISE?

एक चीनी लोककथा पर आधारित
कहानी व चित्र: इन्दु हरिकुमार
अँग्रेज़ी से अनुवाद: शशि सबलोक

© इन्दु हरिकुमार व एकलव्य

इस किताब की सामग्री का गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों के लिए इसी प्रकार के कॉपीलेफ्ट चिह्न के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में इस किताब का ज़िक्र अवश्य करें तथा एकलव्य को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग की अनुमति के लिए एकलव्य के ज़रिए लेखक से सम्पर्क करें।

संस्करण: सितम्बर 2010 / 5000 प्रतियाँ
27,550 प्रतियाँ प्रकाशित एवं वितरित
सितम्बर 2018 / 3000 प्रतियाँ
नवम्बर 2020 / 3000 प्रतियाँ
मार्च 2021 / 3000 प्रतियाँ
दिसम्बर 2021 / 3000 प्रतियाँ
अक्तूबर 2022 / 5000 प्रतियाँ
फरवरी 2024 / 5000 प्रतियाँ
कागज़: 100 gsm मेपलिथो व 250 gsm पेपरबोर्ड (कवर)
ISBN: 978-81-89976-83-5
मूल्य: ₹ 50.00

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
यह किताब अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध है (ISBN : 978-81-89976-84-2 / Price: ₹ 65.00)।

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: बॉक्स कॉरोगेटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोन: +91 755 - 258 7551

कहानी है यह एक खास राज्य की।
एक खुशहाल और सम्पन्न राज्य
की। जवाबों की दुनिया की...

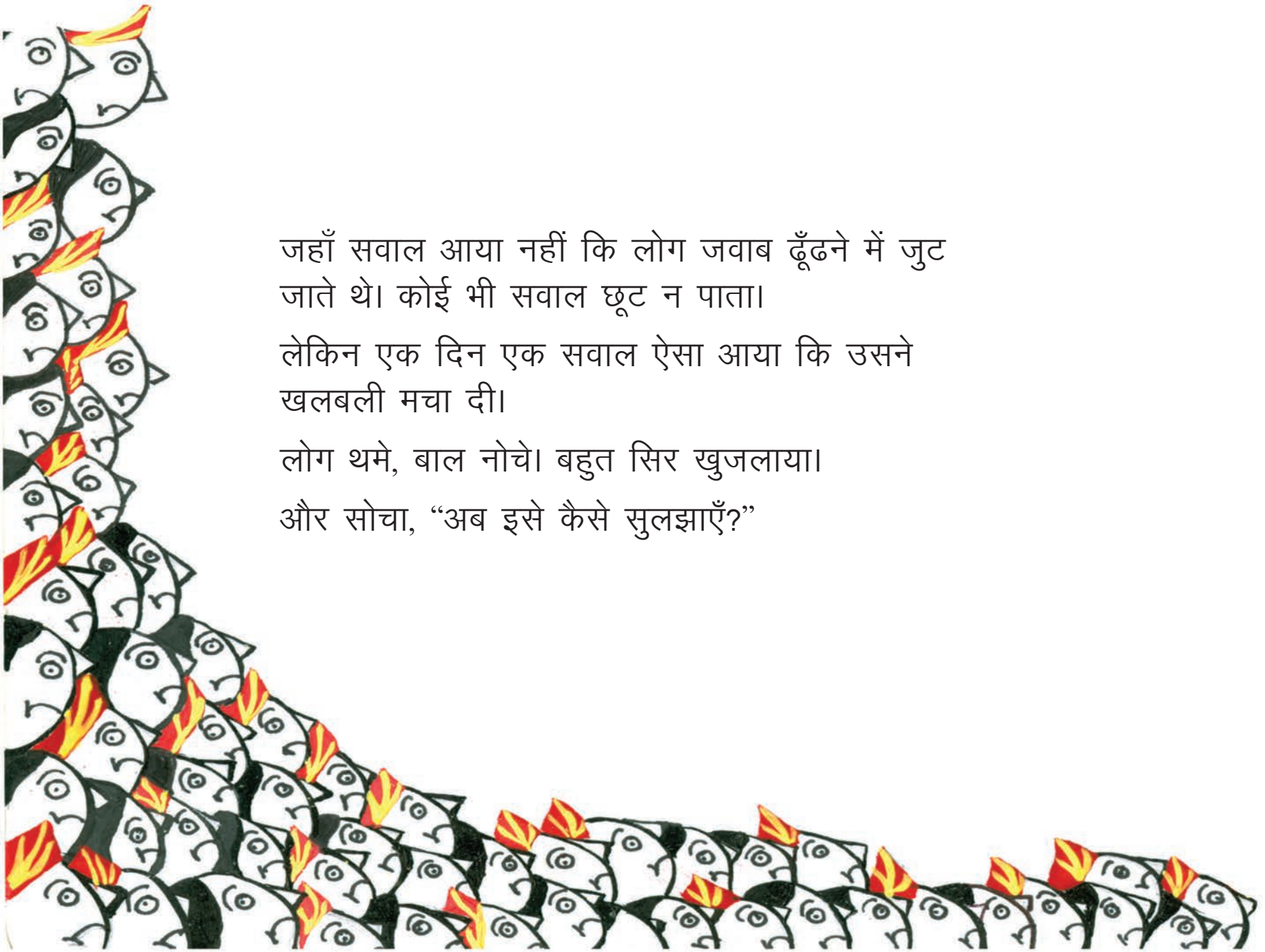

जहाँ सवाल आया नहीं कि लोग जवाब ढूँढने में जुट जाते थे। कोई भी सवाल छूट न पाता।

लेकिन एक दिन एक सवाल ऐसा आया कि उसने खलबली मचा दी।

लोग थमे, बाल नोचे। बहुत सिर खुजलाया।

और सोचा, “अब इसे कैसे सुलझाएँ?”

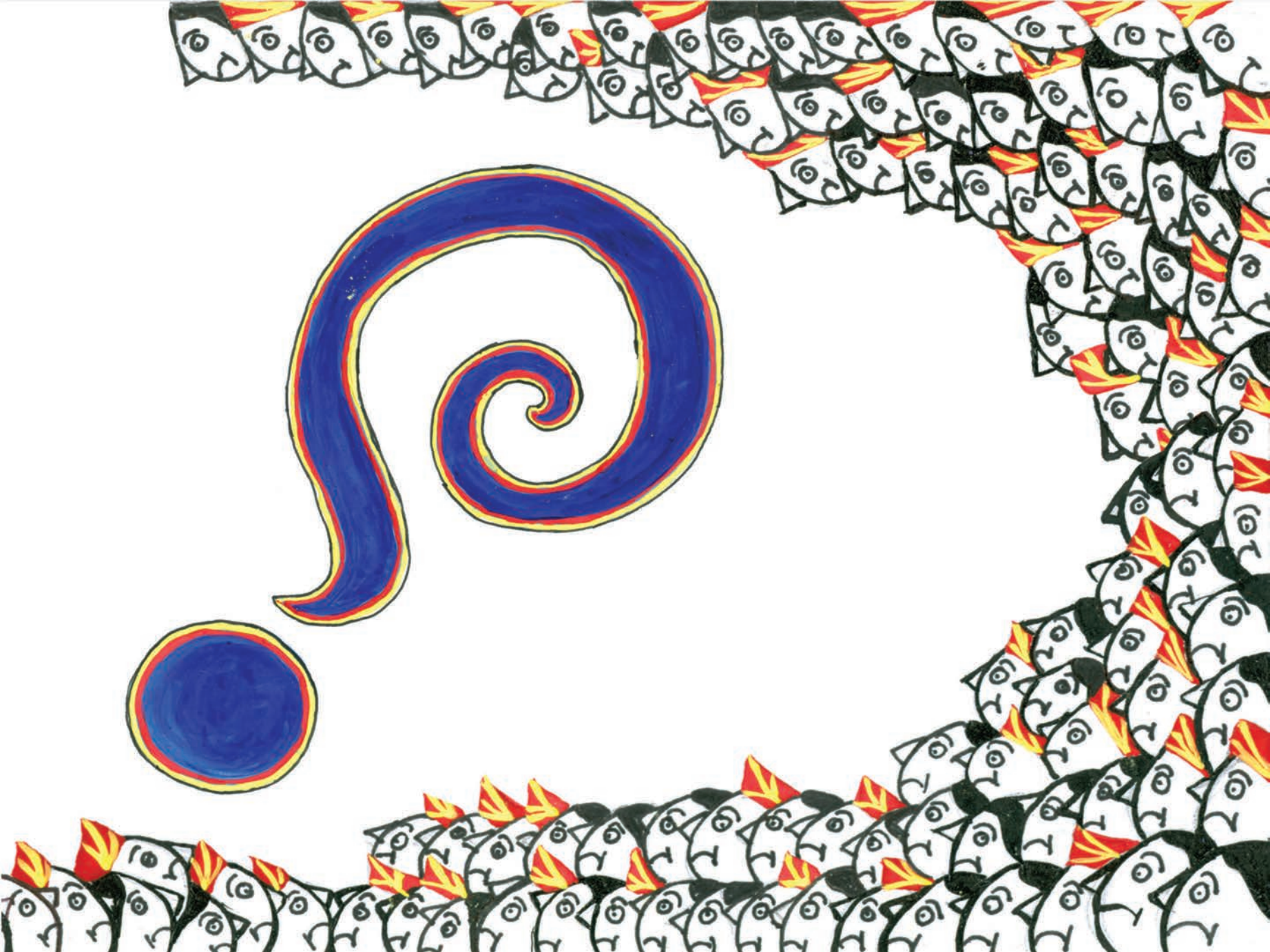

हुआ यह कि सबसे छोटा राजकुमार अप्पुकुट्टन को नाश्ता करा रहा था।

उधर अप्पुकुट्टन लज़ीज़ नाश्ता गड़पने में लगे थे, इधर नन्हें राजकुमार के दिमाग में एक कीड़ा कुलबुलाया। उसका सवाल था बड़ा सरल। वह जानना चाहता था,

सवाल सुनकर नौकर-चाकरों का सिर चकराया।
उन्होंने कहा,

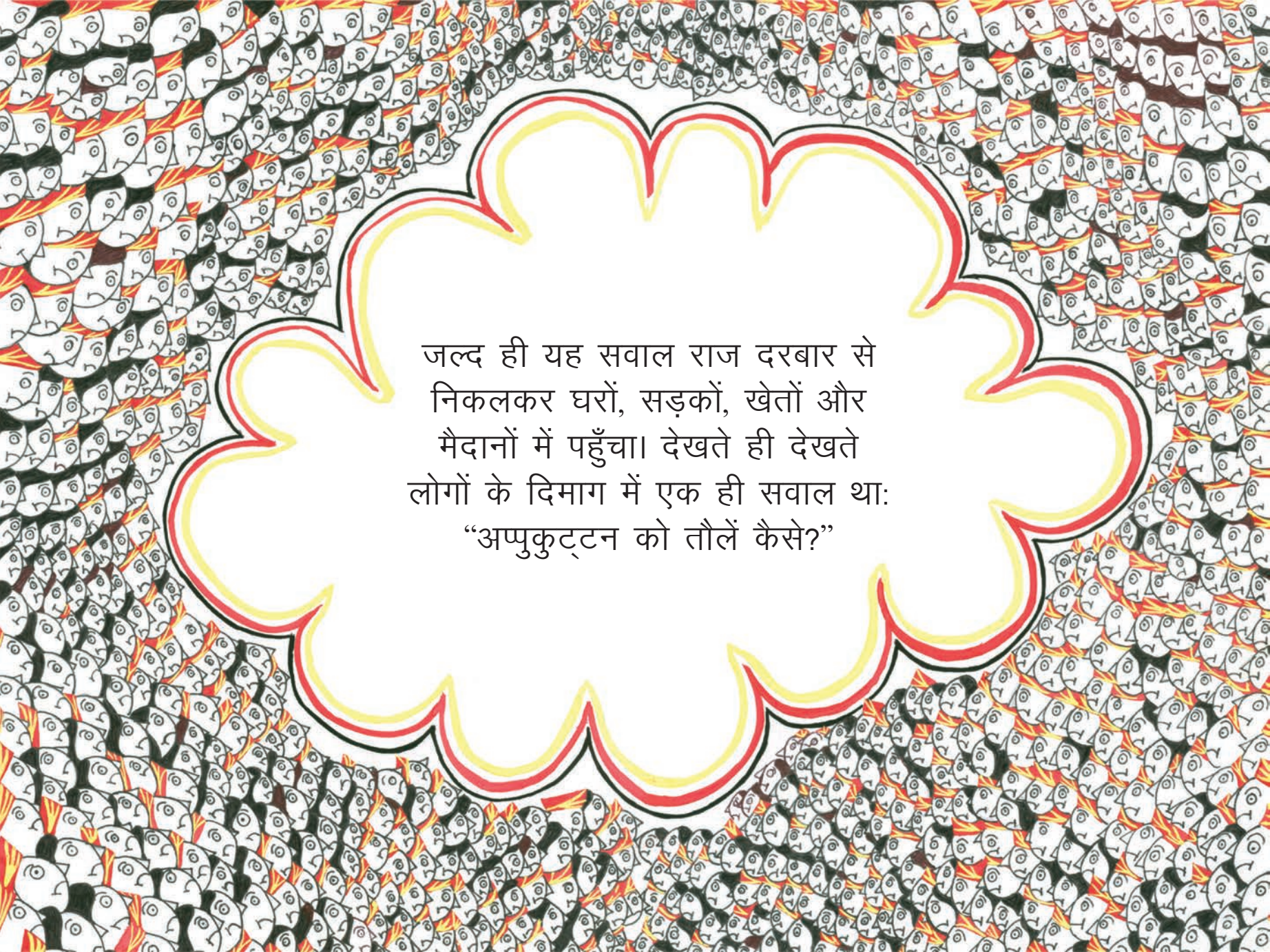
जल्द ही यह सवाल राज दरबार से
निकलकर घरों, सड़कों, खेतों और
मैदानों में पहुँचा। देखते ही देखते
लोगों के दिमाग में एक ही सवाल था:
“अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे?”

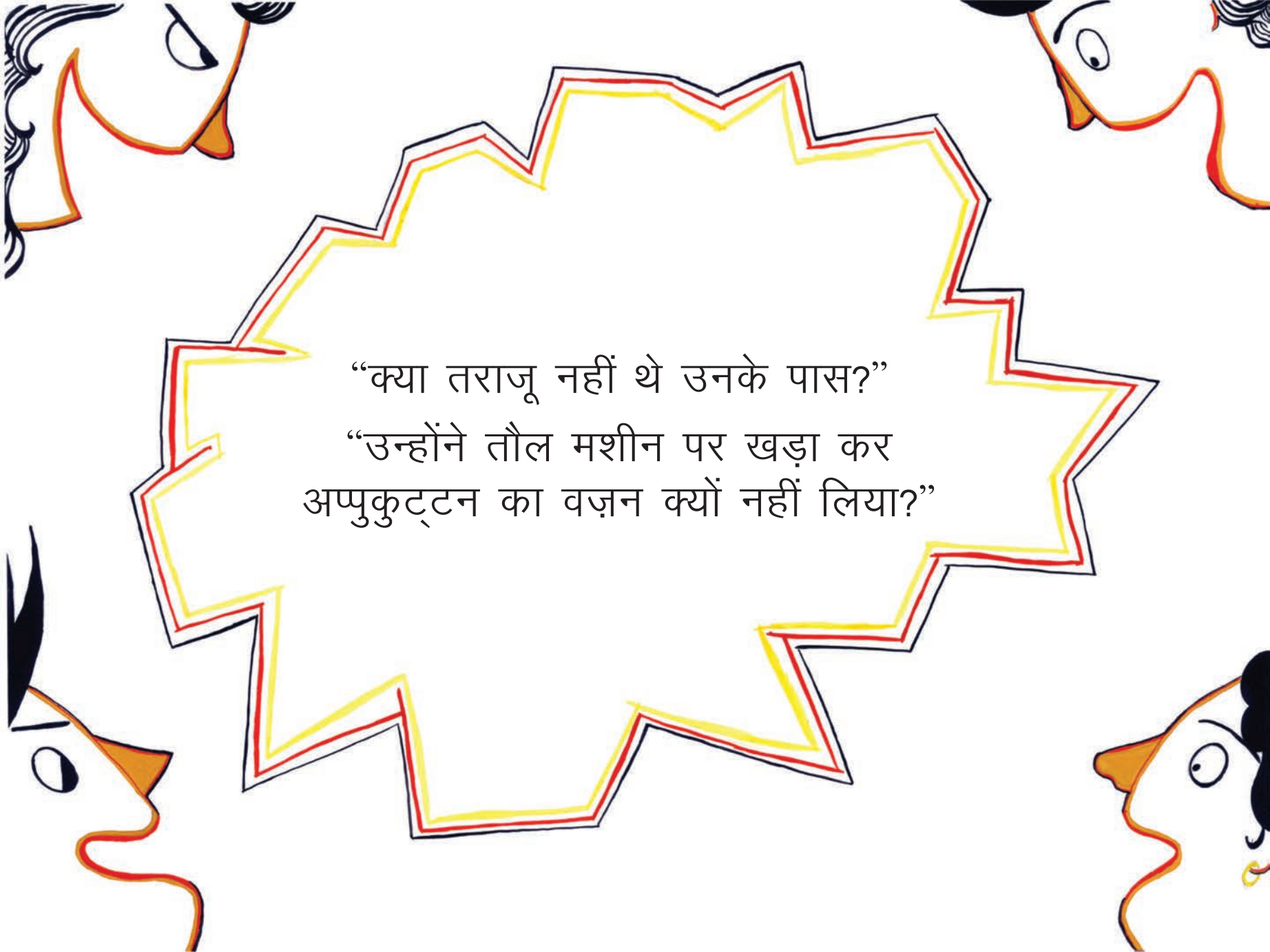
“क्या तराजू नहीं थे उनके पास?”
“उन्होंने तौल मशीन पर खड़ा कर
अप्पुकुट्टन का वज़न क्यों नहीं लिया?”

तराजू तो थे। बल्कि खास तराजू बनाए भी गए, पर...

कुछ अप्पू के लिए छोटे पड़ गए।

कुछ उसके पैर रखते ही टूट गए।

कुछ और को देखकर लोगों ने कहा, “अब अप्पुकुट्टन को कैसे तौलें इससे?”

तुम समझ ही गए होगे कि यहाँ बात एक हाथी की हो रही है। और हाथी भी कोई ऐसा-वैसा नहीं, एक सम्पन्न राज्य का शाही हाथी।

और इसी तरह शाही हाथी का वज़न शाही चिन्ता का विषय बन गया।

तब नन्ही मीनू को एक ख्याल आया। “अरे,
यह तो बड़ा आसान है,” उसने सोचा और
वह चल दी दरबार की ओर।

राजा ने सुना। सुना और सोचा। सोचा और कहा,

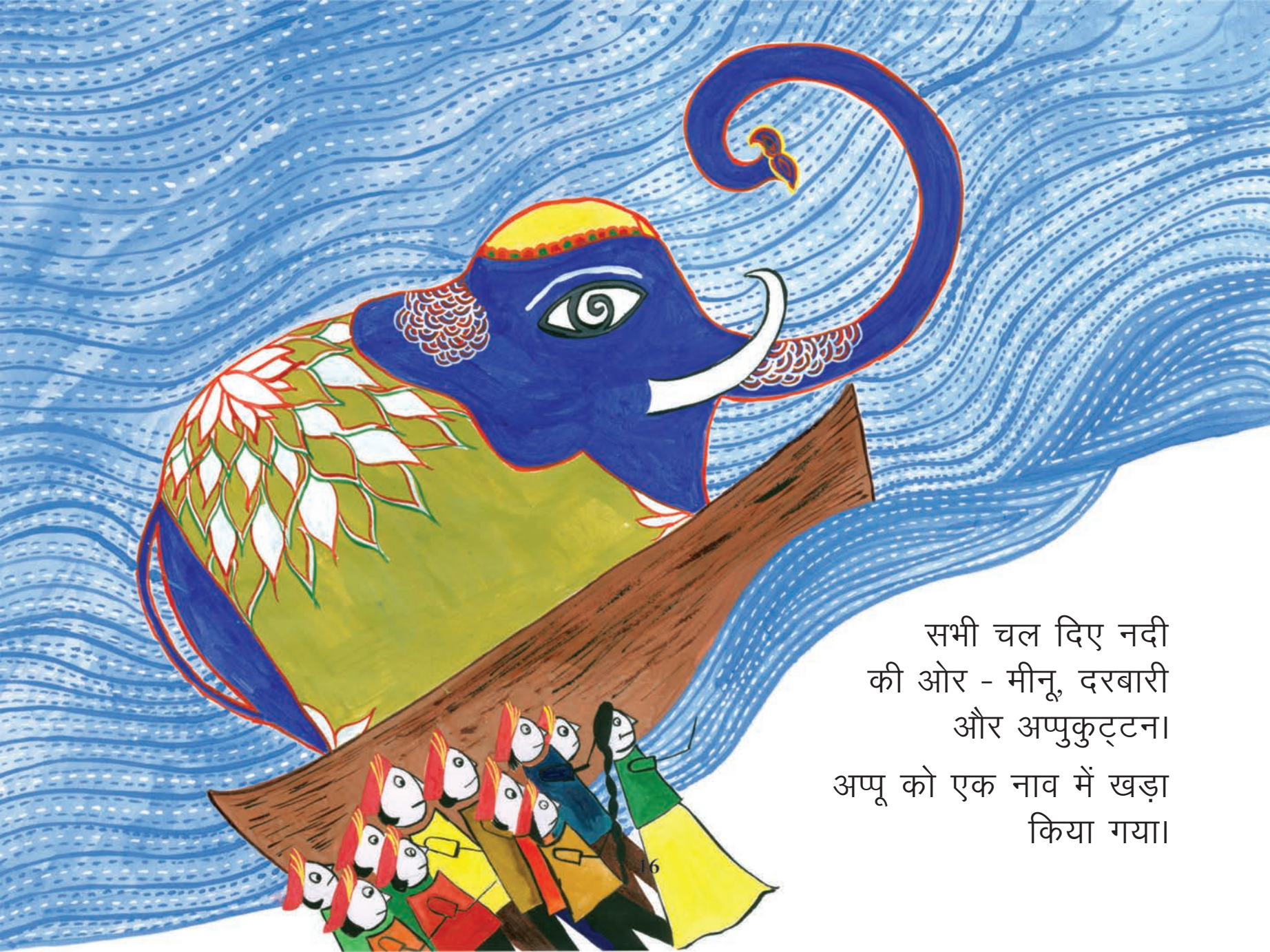

सभी चल दिए नदी
की ओर - मीनू, दरबारी
और अप्पुकुट्टन।

अप्पू को एक नाव में खड़ा
किया गया।

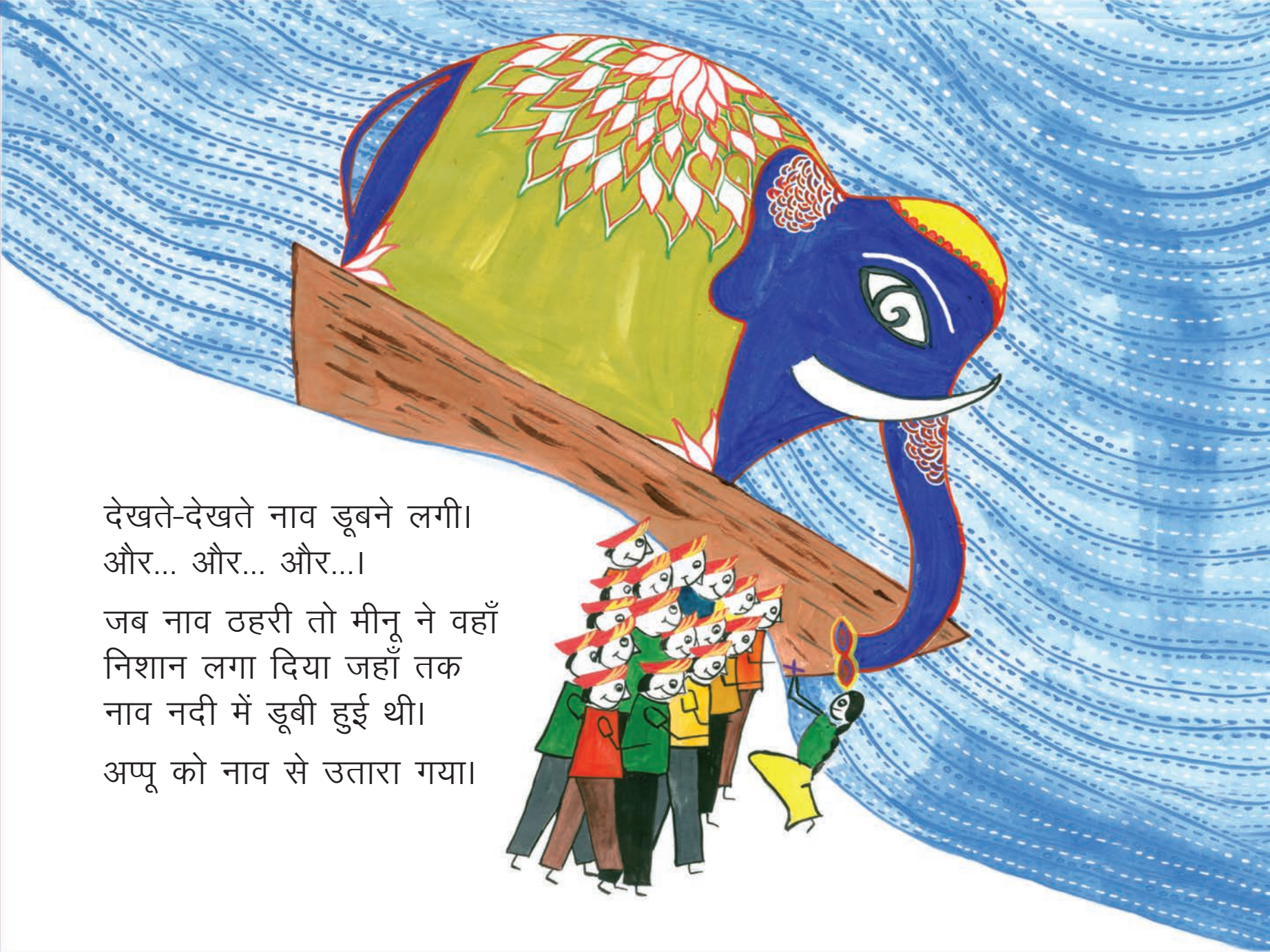

देखते-देखते नाव डूबने लगी।
और... और... और...।

जब नाव ठहरी तो मीनू ने वहाँ
निशान लगा दिया जहाँ तक
नाव नदी में डूबी हुई थी।

अप्पू को नाव से उतारा गया।

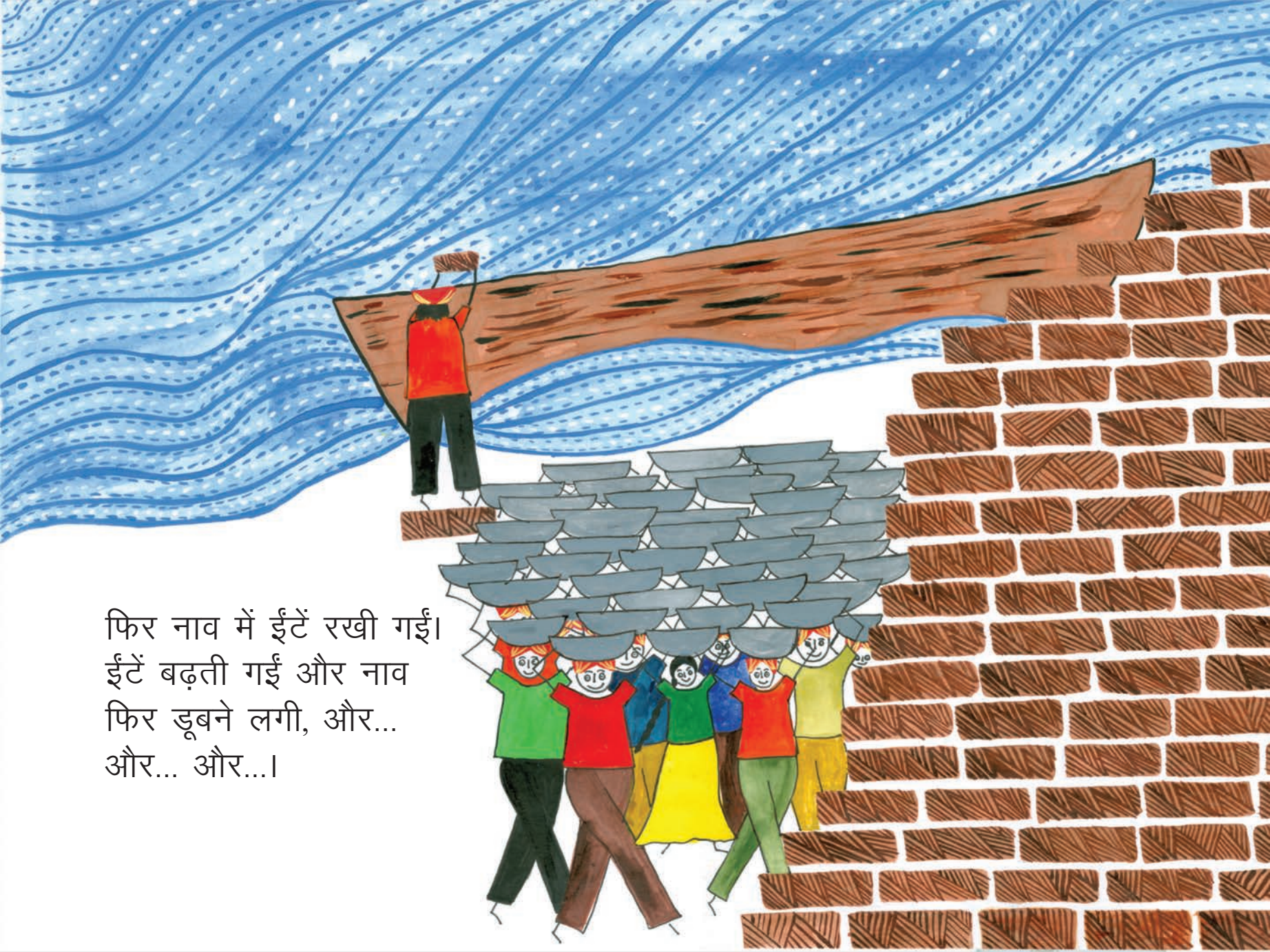

फिर नाव में ईंटें रखी गईं।
ईंटें बढ़ती गईं और नाव
फिर डूबने लगी, और...
और... और...।

जब पानी नाव पर लगे निशान
तक पहुँचा तो मीनू चिल्लाई, “बस,
बस। अब और ईंटें न रखें।”

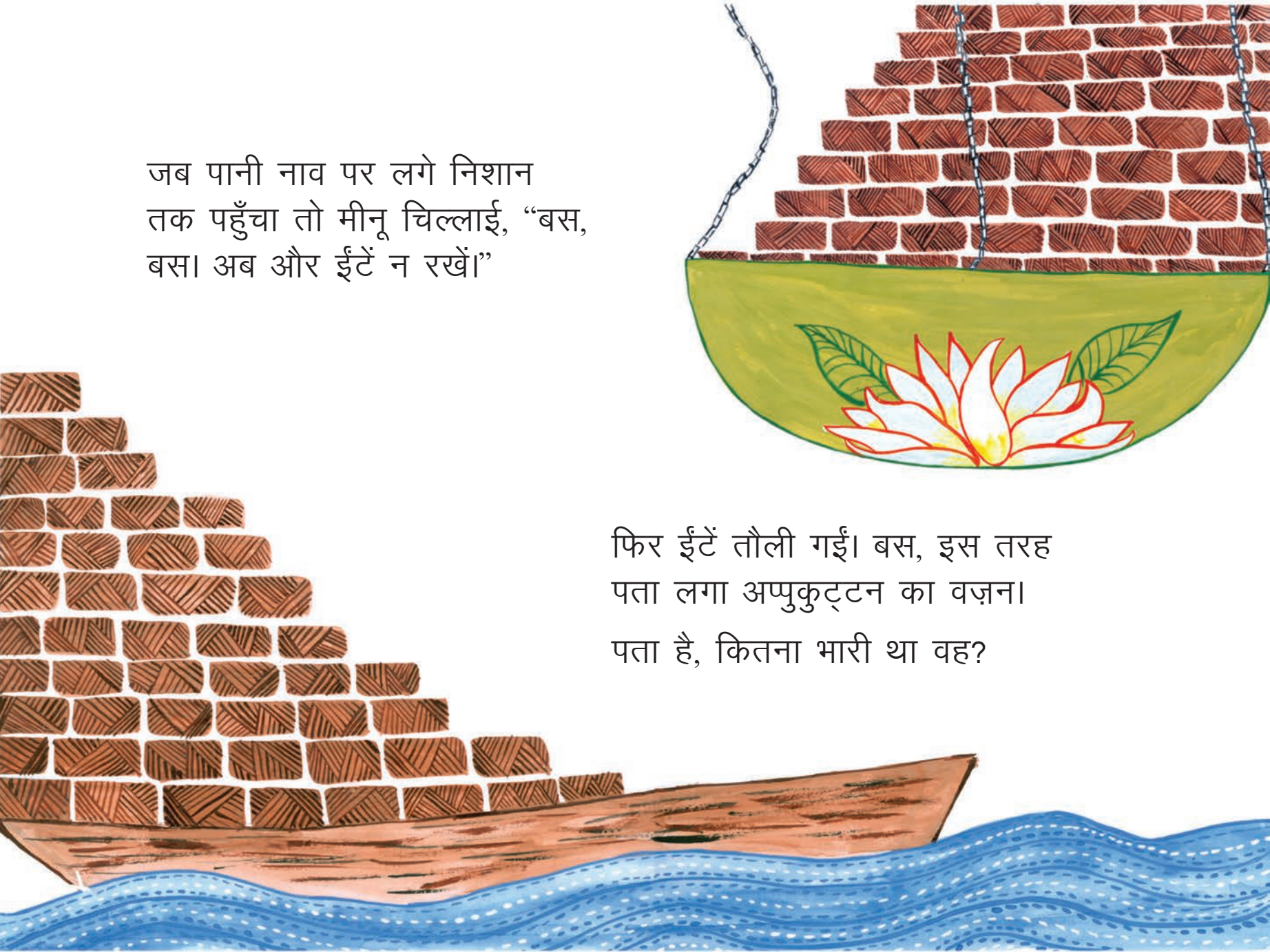

फिर ईंटें तौली गईं। बस, इस तरह
पता लगा अप्पुकुट्टन का वज़न।

पता है, कितना भारी था वह?

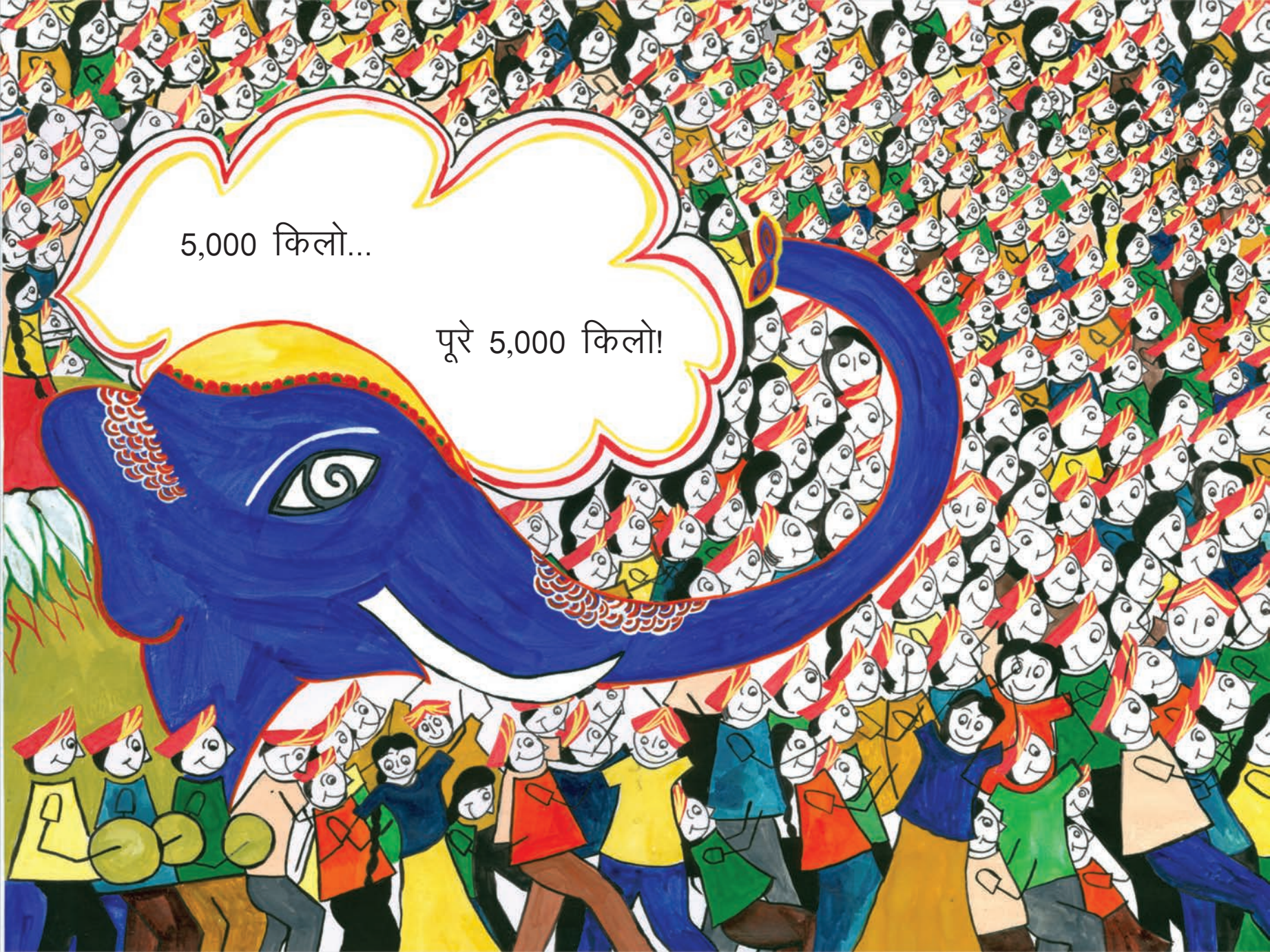
5,000 किलो...
पूरे 5,000 किलो!

जब छोटा राजकुमार अप्पुकुट्टन को नाश्ता करा रहा था, उसके दिमाग में एक सवाल आया, “अप्पू का वज़न कितना होगा?”

जल्द ही सारा राज्य इस सवाल का हल ढूँढने में जुट गया। और हल खोजा नन्ही मीनू ने।

कैसे? यह तुम कहानी पढ़कर पता लगाओ...

इन्दु हरिकुमार बच्चों के लिए लिखती व चित्र बनाती हैं। उन्हें बच्चों के साथ काम करने में बहुत मज़ा आता है। यह उनकी पहली चित्रकथा है।

parag
AN INITIATIVE OF TATA TRUSTS
एकलव्य
मूल्य: ₹ 50.00
9 788189 976835